Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.177, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, NOV–DEC, 2017, VOL- 4/37

उ0 प्र0 के फिराजाबाद जनपद में 'ग्राम्य–नगर प्रवजन' कारण एवं प्रभाव

Dr. Maukam Singh
Department of Geography, A K College Shikohabad, Firozabad (U.P.)

सारांश

विश्व के सभी भागों/हिस्सों से एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर मनुष्य प्रवास करते हैं। अन्तर केवल इतना है कि कुछ राष्ट्रों में प्रवास की दर अधिक है तो कहीं कम। प्रवास को क्या प्रभावित करता है; इसके लिए कोई एक कारण नहीं; अपितु बहुत से कारण उत्तरदायी होते हैं। आन्तरिक प्रवास के सिद्धान्त प्रायः बहुकारकी सिद्धान्तों पर बल देते हैं जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक भी हो सकते हैं। इसलिए आन्तरिक प्रवास के अध्ययन न केवल समाजशास्त्रियों ने किए हैं, अपितु भूगोलविदों ने भी इसमें विशेष रूचि ली है। ग्रामीण–नगरीय प्रवसन की प्रक्रिया से 'बौद्धिक ध्रुवीकरण' हो रहा है; जिससे हमारा समाज दो विपरीत दिशाओं/धाराओं शिक्षित व अशिक्षित में विभाजित होता जा रहा है जो चिन्तनीय है। चूंकि शहर 'अधिक अवसरों के क्षेत्र' होते हैं, अतः व्यक्ति उज्जवल भविष्य हेतु गांव से शहर की ओर पलायन करता है।

पारिभाषिक शब्द : ग्राम्य–नगर प्रवजन, आकर्षक कारक, प्रत्याकर्षक कारक, प्रवास।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष : विश्व के सभी भागों/हिस्सों से एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर मनुष्य प्रवास करते हैं। अन्तर केवल इतना है कि कुछ राष्ट्रों में प्रवास की दर अधिक है तो कहीं कम। प्रवास को क्या प्रभावित करता है; इसके लिए कोई एक कारण नहीं; अपितु बहुत से कारण उत्तरदायी होते हैं। आन्तरिक प्रवास के सिद्धान्त प्रायः बहुकारकी सिद्धान्तों पर बल देते हैं जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक भी हो सकते हैं। इसलिए आन्तरिक प्रवास के अध्ययन न केवल समाजशास्त्रियों ने किए हैं, अपितु भूगोलविदों ने भी इसमें विशेष रूचि ली है। इस प्रसंग में भूगोलविदों ने जो भी शोध अध्ययन किए हैं, वे प्रायः सूक्ष्म/क्षेत्रीय तथा अनुभवाश्रित (माइक्रो–इम्पिरीकल) हैं जिनमें वैज्ञानिक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सामान्यीकरण का अभाव प्रायः देखने को मिलता है। जनांकिकीवेत्ताओं ने आन्तरिक प्रवास के मापन व मूल्यांकन में पद्धतिशास्त्रीय समस्याओं पर मुख्यतः अपना ध्यान आकर्षित कर शोध अध्ययन किए हैं। प्रवास को प्रेरित करने वाले कारकों के अध्ययन करने हेतु वर्तमान ज्ञान पर्याप्त नहीं है। पूर्व आनुभाविक अध्ययनों से प्रवास हेतु दो भिन्न प्रकार के दृष्टिकोण उभर कर सामने आते हैं जिन्हें आकर्षक तथा प्रत्याकर्षक कारकीय सिद्धान्त कहते हैं। विलियम एण्ड पीटरसन[1] के शब्दों में– "It implies that man is everywhere sendentary, remaining fixed until he is included to more by some force. In many cases, it has been observed that migration is not the result of push or pull factors alone or single but the combination of both". भूगोलविद् ऐवरेट्ट एल. एस. ने "A Theory of Migration" नामक अपने ग्रन्थ में लिखा है कि– "The motivational Aspects of Migration are highly subjective. The Push & Pull theory of emigration does not explain why some people migrate; while others do not; under the same circumstances".

ऐवरेट्ट का 'ली' सिद्धान्त :

विद्वान भूगोलविद् ऐवरेट्ट ली द्वारा प्रतिपादित प्रवसन के 'ली' सिद्धान्त के अनुसार मानव के प्रवासन हेतु निर्णय लेने के लिए निम्न चार कारक अहम भूमिका का निर्धारण करते हैं–

(1) मूल निवास के क्षेत्र से जुड़े कारक (2) प्रवास क्षेत्र से जुड़े कारक
(3) दूरी तथा आवागमन के साधनों सम्बन्धी बाधक कारक
(4) वैयक्तिक कारक; यथाः विवाह, पति के साथ पत्नी व बच्चों का जाना, पिता के साथ बच्चों का प्रवास करना आदि ।

उपरोक्त विभिन्न तीन प्रमुख सिद्धान्तों के अतिरिक्त– भौगोलिक कारक, जनांकिकीय कारक, राजनैतिक कारक, धार्मिक कारक भी व्यक्ति/परिवारों के प्रवासन हेतु उत्तरदायी होते हैं।

अनुसंधित्सु ने प्राप्त/उपलबध द्वितीयक तथ्यों से प्रेरित होकर ग्रामीण–नगरीय प्रवासन हेतु उत्तरदायी आकर्षक तथा प्रत्याकर्षक कारकों को उ. प्र. के जनपद फिरोजाबाद के, अध्ययनार्थ चयनित, सभी 100 प्रवासी सूचनादाताओं से, साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से, साक्षात्कार के समय गहन पूछताछ कर ज्ञात किया है। अग्रांकित तालिका सभी 100 प्रवासी परिवारों के मुखिया

सूचनादाताओं द्वारा बताए गए ग्रामीण नगरीय प्रवास हेतु उत्तरदायी प्रत्याकर्षक कारकों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका (1) : सर्वेक्षित क्षेत्र में प्रवासन हेतु उत्तरदायी प्रत्याकर्षक कारक

क्रम	***प्रमुख उत्तरदायी प्रत्याकर्षक कारक***	***प्रवासियों की आवृत्तियाँ***	***प्रतिशत***
1	पारिवारिक तनाव तथा संघर्ष (लड़ाई झगड़े)	10	10.00
2	बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्या	24	24.00
3	यातायात तथा मनोरंजन के साधनों का अभाव	04	04.00
4	संरक्षा तथा सुरक्षा के साधनों की कमी	09	09.00
5	स्वास्थ्य व शिक्षा सुविधाओं की कमी	28	28.00
6	लघु–कुटीर उद्योग धन्धों का पतन	10	10.00
7	अच्छे रोजगारों की कमी	07	07.00
8	उच्च शिक्षण संस्थाओं की कमी	08	08.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका सभी 100 प्रवासी मुखिया सूचनादाताओं द्वारा स्वयं के ग्रामीण–नगरीय प्रवास हेतु उनके द्वारा बताए गए उत्तरदायी प्रत्याकर्षक कारकों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है। तालिका में प्रदर्शित कम प्रतिशतता यह स्पष्ट करती है कि सर्वेक्षित सूचनादाताओं में से प्रत्येक सूचनादाता ने एक से अधिक प्रत्याकर्षक कारकों को स्वीकार किया है। सर्वेक्षित कुल 100 सूचनादाताओं में से प्रत्याकर्षक कारकों के रूप में 10(10 प्रतिशत) ने पारिवारिक तनाव व लड़ाई झगड़े, 24(24 प्रतिशत) सर्वाधिक ने गांवों में रोजगार की कमी (बेरोजगारी की समस्या, 4(4 प्रतिशत) ने यातायात व मनोरंजन के साधनों की कमी, 9(9 प्रतिशत) ने संरक्षा व सुरक्षा के साधनों की कमी, 28(28 प्रतिशत) ने स्वास्थ्य व शिक्षा सुविधाओं की कमी, 10(10 प्रतिशत) ने गांव देहात में लघु कुटीर उद्योग धन्धों का पतन, 7(7 प्रतिशत) ने अच्छे रोजगारों की कमी तथा 08(8.00 प्रतिशत) ने उच्च शिक्षण संस्थाओं की कमी के कारणों को प्रत्याकर्षक कारक स्वीकार किया है। इस प्रकार इन प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में सुस्पष्ट है कि ग्रामीण–नगरीय प्रवास हेतु कोई एक कारक उत्तरदायी नहीं, विभिन्न विषम परिस्थितियां (प्रत्याकर्षक कारक) उत्तरदायी हैं। प्रमुख प्रत्याकर्षक कारक–पारिवारिक तनाव तथा आपसी लड़ाई झगड़े, निर्धनता, बेरोजगारी की समस्या, गांवों में संरक्षा व सुरक्षा की कमी,

चिकित्सीय व शिक्षा सुविधाओं का न होना, ग्रामीण लघु–कुटीर उद्योग धन्धों का पतन, अच्छे रोजगारों का नितान्त अभाव, बच्चों की भविष्य की चिन्ताएं इत्यादि बताए हैं। इस तथ्य की पुष्टि **गुप्ता सुरेन्द्र** तथा **फ्रान्सिस** के अध्ययनों से भी होती है। निम्नांकित तालिका (2) सर्वेक्षित क्षेत्र में सूचनादाताओं द्वारा बताए गए प्रवास हेतु उत्तरदायी प्रमुख आकर्षक कारकों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका (2) : सर्वेक्षित क्षेत्र में प्रवास हेतु उत्तरदायी प्रमुख आकर्षक कारक

क्रम	***प्रवास हेतु सूचनादाताओं द्वारा बताए गए आकर्षक कारक***	***आवृत्तियाँ***	***प्रतिशत***
1	नगरों में विभिन्न सुविधाओं के कारण नगरीय जीवन का आकर्षण	10	10.00
2	उच्च तथा बेहतर रोजगारों का आकर्षण	17	17.00
3	अच्छी तथा उच्च शिक्षा सुविधाओं का आकर्षण	20	20.00
4	चिकित्सीय व स्वास्थ्य, स्वच्छता व बच्चों हेतु इंग्लिश शिक्षा का आकर्षण	08	08.00
5	मनोरंजन के विभिन्न साधनों का होना	03	03.00
6	रोजगार (आय वृद्धि) के अवसरों की सहज उपलब्धता	16	16.00
7	सामाजिक संरक्षा व सुरक्षा के साधन	07	07.00
8	आवागमन के साधनों की प्रचुरता	05	05.00
9	जनसंचार साधनों की प्रतिपल उपलब्धता	04	04.00
10	ग्रामीण गन्दी राजनीति से बचने के लिए	11	11.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका सभी 100 प्रवासी परिवारों के मुखिया सूचनादाताओं द्वारा अपने प्रवास हेतु बताए गए उत्तरदायी आकर्षक कारकों के प्रसंग में 10(10 प्रतिशत) सूचनादाताओं ने प्रवास का कारण विभिन्न सुविधाओं के कारण नगरीय आकर्षण होना, 17(17 प्रतिशत) प्रवासियों ने उच्च तथा बेहतर रोजगारों का आकर्षण होना 20(20 प्रतिशत), प्रवासियों ने अच्छी तथा उच्च शिक्षा सुविधाओं का नगरों में होना, 8(8 प्रतिशत) प्रवासियों ने चिकित्सीय व स्वास्थ्य, स्वच्छता और बच्चों के लिए इंग्लिश मीडियम स्कूली शिक्षा का आकर्षण, 3(3 प्रतिशत) प्रवासियों ने मनोरंजन के विभिन्न साधनों की उपलब्धता, 7(7 प्रतिशत) प्रवासियों ने शहरों में संरक्षा तथा सुरक्षा साधनों की उपलब्धता, 5(5 प्रतिशत) प्रवासियों ने आवागमन के साधनों की प्रचुर मात्रा में

उपलब्धता, 4(4 प्रतिशत) प्रवासियों ने शहरों में जन संचार साधनों की उपलब्धता तथा 11(11 प्रतिशत) प्रवासियों ने ग्रामीण गन्दी राजनीति से बचने के लिए, आदि कारकों को अपने प्रवास हेतु उत्तरदायी कारक बताया है। निःसन्देह; विभिन्न कारकों से आकर्षित होकर प्रवासियों ने मथुरा नगर में प्रवास किया है। इन सभी आकर्षक कारकों से प्रेरित होकर ग्रामीण–नगरीय प्रवास करने की पुष्टि सर्वश्री सक्सैना डी.पी. तथा मजूमदार एस. एण्ड इला मजूमदार के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए आनुभविक अध्ययनों से भी होती है। अनुसंधित्सु ने ग्रामीण–नगरीय प्रवसन के दुष्प्रभावों का भी अध्ययन किया है; जिस पर निम्न तालिका 3 संक्षित प्रकाश डालती है–

तालिका 3 : ग्रामीण–नगरीय प्रवसन के दुष्प्रभावों के प्रति दृष्टिकोण

क्रम	*ग्रामीण–नगरीय प्रवसन के दुष्प्रभाव*	*सूचनादाताओं के प्रत्युत्तर (आवृत्तियों तथा प्रतिशत में)*				*योग प्रतिशत*
		हाँ	*नहीं*	*उदासीन*	*अनुत्तरित*	
1	मानसिक असन्तोष	**71 (71.00)**	**10 (10.00)**	**15 (15.00)**	**04 (04.00)**	**100 (100.00)**
2	अन्तरवैयक्तिक सम्बन्धों का ह्रास	**90 (90.00)**	**-- (00.00)**	**10 (10.00)**	**-- (00.00)**	**100 (100.00)**
3	सामंजस्य की समस्या	**81 (90.00)**	**18 (18.00)**	**01 (01.00)**	**-- (00.00)**	**100 (100.00)**
4	जनघनत्व में वृद्धि	**63 (63.00)**	**30 (30.00)**	**06 (06.00)**	**01 (01.00)**	**100 (100.00)**
5	अस्थिर जीवन	**80 (80.00)**	**10 (10.00)**	**10 (10.00)**	**-- (00.00)**	**100 (100.00)**
6	सांस्कृतिक संघर्ष	**60 (60.00)**	**-- (00.00)**	**40 (40.00)**	**-- (00.00)**	**100 (100.00)**
7	निम्न जीवन स्तर	**65 (65.00)**	**20 (20.00)**	**13 (13.00)**	**02 (02.00)**	**100 (100.00)**
8	गन्दी बस्तियों का उदय	**79 (79.00)**	**07 (07.00)**	**16 (16.00)**	**-- (00.00)**	**100 (100.00)**
9	बेरोजगारी का भय	**58 (58.00)**	**20 (20.00)**	**20 (20.00)**	**02 (02.00)**	**100 (100.00)**
10	आवासीय समस्या	**84 (84.00)**	**-- (00.00)**	**16 (16.00)**	**-- (00.00)**	**100 (100.00)**
11	अन्य विविध समस्याएं	**61 (61.00)**	**-- (00.00)**	**38 (38.00)**	**01 (01.00)**	**100 (100.00)**

प्रसंगाधीन तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण–नगरीय प्रवसन से प्रवास स्थलीय दुष्प्रभावः 71(71 प्रतिशत) सूचनादाताओं के अनुसार मानसिक असन्तोष, 90(90 प्रतिशत) के अनुसर

अन्तरवैयक्तिक सम्बन्धों का ह्रास, 81(81 प्रतिशत) के अनुसार सामंजस्य की समस्या, 63(63 प्रतिशत) के अनुसार जनघनत्व में वृद्धि, 80(80 प्रतिशत) के अनुसार अस्थिर जीवन, 60(60 प्रतिशत) के अनुसार सांस्कृतिक सम्पर्क की समस्या, 65(65 प्रतिशत) के अनुसार निम्न जीवनस्तर, 79(79 प्रतिशत) के अनुसार गन्दी बस्तियों (झुग्गी झोंपड़ियों) का अभ्युदय, 60(60 प्रतिशत) के अनुसार सुविधाओं में कमी, 58(58 प्रतिशत) के अनुसार बेरोजगारी का भय, 84(84 प्रतिशत) के अनुसार आवास की समस्या तथा 61(61 प्रतिशत) के अनुसार अन्य विविध प्रकार की समस्याएं जनित होना हैं। यहां पर उल्लेखनीय तथ्य यह है कि प्रत्येक सूचनादाता ने ग्रामीण–नगरीय प्रवसन से पड़ने वाले एकाधिक दुष्प्रभावों को स्वीकार किया है। इस प्रकार जहां ग्रामीण–नगरीय प्रवसन लाभकारी सामाजिक प्रक्रिया हैं, वहीं इससे अनेकों हानियां भी हैं।

निष्कर्ष :

- प्रवसन, सांस्कृतिक सम्बर्द्धन तथा सामाजिक एकीकरण के साथ–साथ व्यक्ति व परिवार की सामाजिक प्रगति में सहायक है।
- ग्रामीण–नगरीय प्रवसन की प्रक्रिया से 'बौद्धिक ध्रुवीकरण' हो रहा है; जिससे हमारा समाज दो विपरीत दिशाओं/धाराओं शिक्षित व अशिक्षित में विभाजित होता जा रहा है जो चिन्तनीय है।चूंकि शहर 'अधिक अवसरों के क्षेत्र' होते हैं, अतः व्यक्ति उज्जवल भविष्य हेतु गांव से शहर की ओर पलायन करता है।
- ग्रामीणों में यह विचारधारा पनप गयी है कि जो व्यक्ति/परिवार, गांव छोड़कर शहर में जा बसा; उसने शैक्षिक तथा, सामाजिक–आर्थिक प्रगति की है; उनके बच्चों के भविष्य सुधरे हैं; अतः ग्रामीणजन, ग्राम–नगर प्रवसन के पक्षधर पाए गए हैं ।

REFERENCES

1. William Peterson; Population, Mac-millan Company (Pvt. Ltd.) London, 1999, page 289.
2. Everett L.S.; A Theory of Migration, Cambridge University Press, Cambridge, 1999, page 170.

3. Hans Raj; Fundamentals of Demography : Population Studies with special reference to India, Surjeet Publications, Delhi, 1998, p. 191.
4. Kumar Vimal; Demography, Sahitya Bhawan Prakashan, Hospital Road Agra, 2009, page 190.
5. Gupta Surendra, Role of migration in the process of urbanization in Assam, Social Action, Vol. 34, Jan. March 2010, page 71.
6. Francis Abrahim M. (et. al.) Patterns of Mobility and migration , International Review of modern Geography Vol. 4, No. 1, April 2004, page 78-82.
7. Majumdar S & Illa Majumdar; Rural Migrants in Urban Setting, Hindustan Publishing Co. Delhi, 1978, page 102.